ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3592672

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Arts

भारतीय चित्रकला की विविध तकनीक

डा. बबीता शर्मा [1]
[1] असिस्टेंट प्रोफेसर, चित्रकला विभाग, आई. एन. पी.जी. कालिज, मेरठ

शोध-सारांश
मानव के जन्म से लेकर आज तक कला उसके साथ परछाई के समान चलती रही। ईशवर ने अपनी समस्त कलाओं के द्वारा सृष्टि की रचना की है। उसकी सभी कलाओं के अन्तरस में सजीवता मुख्य आकर्षण का केन्द्र बिन्दु रही। ईशवर की बनायी कलाकृतियां भी स्वयं में एक सम्पूर्ण कला के रूप में प्रतिष्ठित है। मानव ईशवर की सर्वश्रेष्ठ कला है। जिसमें समस्त कलायें एक माला में मोतियों के समान पिरोई गयी, जो कि समय-समय पर मानव द्वारा संसार को समर्पित होती रही और सदा अपने सौन्दर्य से संसार को सुशोभित करती रही है।

मुख्य शब्द – भारतीय, चित्रकला, विविध तकनीक

Cite This Article: डा. बबीता शर्मा. (2019). "भारतीय चित्रकला की विविध तकनीक." *International Journal of Research - Granthaalayah*, 7(11SE), 285-290. https://doi.org/10.5281/zenodo.3592672.

कलाकार सदैव नवीनता की खोज में रहता है। यह सत्य है-एक ही प्रकार की कलाकृतियों को देखते-देखते मानस ऊबने लगता है, नवीनता के लिए आकुल हो उठता है। कलाकार तो और जल्दी ही अधीर हो जाता है। आधुनिक कला ने तीव्र गति से जो नये-नये मोड़ लिये है, जितनी जल्दी-जल्दी एक के बाद दूसरी कला तकनीके आती और जाती रही है, ये इस तथ्य के ज्वलंत उदाहरण हैं। प्राचीन ग्रीक कलाकारों ने अपनी अनुपम प्रतिज्ञा से यर्थाथ को आदरण में परिष्कृत करके कला को यह अनुपम लालित्व प्रदान किया जो आज तक के कला इतिहास में अभूतपूर्व है। उनकी कलाकृतियों से उत्प्रेरित होकर इटली के नवजागरण कालीन चित्रकारों ने चित्रों और मूर्तियों का सृजन किया।

दर्पण तुल्य यर्थाथ को प्रस्तुत किया। समस्त यूरोप में उनका वैभव फैला, इतना अधिक कि देखते-देखते कलाकार ऊब गये। नवीनता के लिए व्याकुल हो गये। कलाकृतियों के स्वरूप में परिवर्तन होने लगे। उन्नीसवीं सदी में कैमरे के अविष्कार ने रही-सही कसर भी पूरी कर दी। प्रतिस्पर्धा देखकर कलाकारों ने कैमरे की क्षमता से परे नवीन यर्थाथ का सृजन करने का अभियान उठाया। नवीन दिशाओ की खोज की अतः नवीन सत्यों पर आधारित नाना प्रकार की कलाकृतियों का बहुत भारी संखया में सृजन किया। शैलियों का वैविध्य इतना अधिक है कि उसकी सूक्ष्म विलक्षणताओं को बिना देखे कभी-कभी उनका पारस्परिक भेद बतलाना भी कठिन हो जाता है। आधुनिक कला की ये नयी तकनीके जहां कला जगत में नवीनता प्रदान कर रही है वहीं मानव जीवन से जुड़े विभिन्न क्षेत्रों में भी अपना योगदान दे रही है। ये नवीन तकनीके भिन्न है-

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3592672

पटचित्रकला-

पटचित्र भारतवर्ष की उत्कृष्ट श्रेणी का आदरण है। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक सारहीन जीवन शक्ति के कारण चित्रकला अपेक्षित सी हो गयी थी। चित्रकला के ज्ञान से वंचित शिल्पीओ के द्वारा अंकित किये गये चित्रों में भारतीय कला की रीति एवं प्रणाली की पुनरावृत्ति क्षीण हो चुकी थी, इंस्में सजीवता पूरी तरह लुप्त हो चुकी थी। पारिवारिक जीवन में उसका कोई मेल नहीं रह गया था। इधर गुप्त युग को प्राचीन आदरण चित्रकला में कलाकार के अन्तःकरण की प्रेरणा रहा करती थी। इसलिए विषय वस्तु के निर्वाचन में एकांगीपन का न होना स्वाभाविक ही था। गुप्त युग की गुहा चित्रावली ने बुद्ध की जीवनी एवं उस युग के जीवन की घटनाओं को आधार मानकर प्रतिष्ठा प्राप्त की।

विज्ञापन कला-

आज व्यक्ति सुबह से रात्रि तक अपने विज्ञापनों से घिरा महसूस करता है जो किसी न किसी रूप में कला का ही परिवर्तित रूप है। सुबह उठते ही समाचार पत्रों, पत्रिकाओं मे विज्ञापन को देखता है, घर के बाहर निकलने पर सड़क पर होर्डिंग पर चित्रित कला, वॉल पेंटिंग, पोस्टर या अन्य किसी न किसी रूप से कला विज्ञापन नजर आते हैं। किसी भी कार्य को प्रभावी व सृजनात्मक ढंग से करना कला है। प्राचीन काल से ही विज्ञापनों को एक कला के रूप में माना गया है। विज्ञापन में सृजनात्मकता के साथ-साथ प्रभावों का विशेष योगदान रहता है। विज्ञापन की सृजनात्मक योग्यता से ही सम्प्रेक्षण के प्रभावशाली उपाय प्राप्त होते है। आधुनिक युग में भी वैज्ञानिक पद्धतियों के प्रयोग ने विज्ञापन में सृजनात्मकता को और अधिक प्रभावशाली बनाया है। विज्ञापन द्वारा उत्पादन या सन्देश को कलात्मक दृष्टी से प्रस्तुत किया जाता है जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के कला विशेषज्ञों एवं सृजनात्मकता का रंगों के संयोजन, शब्दों, सन्देश और चित्रों के निर्माण में विशेष योगदान रहता है। जिसके कारण विज्ञापन की कलात्मक प्रस्तुती उपभोगता को प्रभावित करती है। एक विज्ञापन आकर्षित करने वाला एवं प्रभावी तभी बनता है जब उसमें कलात्मक बोध होता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि विज्ञापन ने उद्योग, विज्ञान एवं व्यावसायिक विषेशताओ के होते हुए भी यह एक कलात्मक अभिव्यक्ति है।

कम्प्यूटर कला-

विज्ञान के साथ-साथ कला के क्षेत्र में नवीनतम सामग्री है- कम्प्यूटर। कम्प्यूटर में फोटो कॉपी व कोरल के द्वारा नवीन प्रभावों को उत्पन्न कर इच्छानुसार प्रभाव लाकर अपनी कृति का रूप बदला जा सकता है। इसमें इच्छानुसार टैक्सचर, संयोजन, ज्यामितीय रचना, सतह विभाजन आदि अध्ययन कार्य भी किए जा सकते है। 'कोरल' के द्वारा 'बुक कवर' व विजिटिंग कार्ड आदि अनेक कार्यों को व्यवसाय के रूप में भी चलाया जा रहा है। आज दृश्य व श्रृव्य माध्यमों का प्रयोग दैनिक जीवन का अंग बनने लगा है। समाचार पत्रों से, सिनेमा, फोटोग्राफ आदि में प्रकाशन, संयोजन, रंग, आकार अन्य कार्यों में कला को महत्ता प्रदान की गयी है।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3592672

फोटोग्राफी कला-

फोटोग्राफी एक आधुनिक तकनीक के रूप में आज एक आवश्यकता बनकर सामने आयी है। आज के कम्प्यूटर युग में कैमरे ने एक विशेष क्षमता प्राप्त कर ली है।

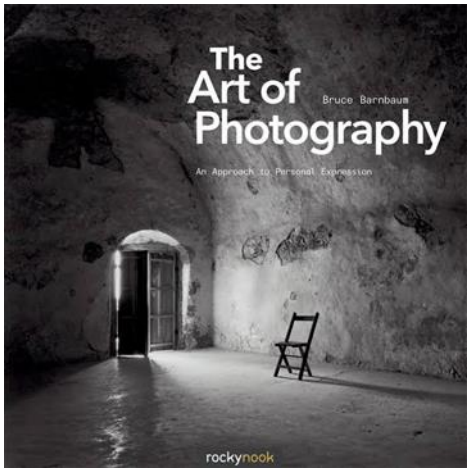

यद्यपि कम्प्यूटर की दिशा में औद्योगिकरण अधिक हुआ है उतना कैमरे में नहीं। कम्प्यूटर उद्योग में लेंसेज के डिजाइन को बनाने तथा फिल्मों में अधिक निपुणता लाने का प्रयत्न किया जा रहा है। बैटरी द्वारा संचालित माइक्रोमिनिएचर लगे कम्प्यूटर का कैमरे में इंस्तेमाल प्रकाश को संयोजित करने में उपयोगी सिद्ध हो रहा है।

आज छाया चित्रकला को एक कलात्मक प्रयोग के रूप में काम लिया जाने लगा है। वैसे कुछ नये कलाकारों का उदय भी हो रहा है जो कि आज की प्रचलित प्रवृत्तियों को अभिव्यक्त करते है चित्रात्मक भूखण्ड चित्रों और उनकी वृत्तियों पर महत्व कम होता जा रहा है। ''अरूपपैटर्न'' आदि पर महत्व अधिक और संभावित छायाचित्रों पर ''जैसा है जहां है'' दृष्टिकोण पर महत्व अधिक है और संयोजित चित्रों पर कम। कैमरा ज्यादा शक्तिशाली तथा नग्न तरीके से यथार्थ को अंकित करता है। अब 35 एम0एम0 कैमरा एक महत्वपूर्ण वस्तु हो गयी है और रंगीन चित्रकारिता ने भी अपना उच्च स्थान ग्रहण कर लिया है। लाईफ तथा र्स्टन आदि पत्रिकाओं ने इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया है। सी0 आर0 मंडी0 के समय 'इ लस्ट्रेरेटेड वीकली' में छाया पत्रकारिता को काफी प्रोत्साहन मिला था।

ग्राफिक कला- ग्राफिक डिजाइनिंग में मूल रूप से टेक्स्ट और ग्राफिकल एलीमेंट का प्रयोग किया जाता है इसका मुख्य कार्य पेज एवं अन्य प्रोग्राम को आकर्शक और सुन्दर बनाने का होता है। ग्राफिक डिजाइन वह आर्ट है जिसमें टेक्स्ट और ग्राफिक के द्वारा कोई संदेश लोगों तक प्रभावी तरीके से पहुंचाया जाता है। यह संदेश ग्राफिक्स लोगों, ब्रोशर, न्यूज लेटर, पोस्ट या फिर किसी भी रूप में हो सकता है। ग्राफिक कलाकारों ने व्यापार जगत में अपनी एक विशेष जगह स्थापित कर ली है।

आभूषण कला- रत्न और आभूषण सदा से ही हमारी जिन्दगी का हिस्सा ले रहे हैं। आज के लाइफस्टाइल में तो इनकी अहमियत और अधिक हो गयी है। यही कारण है कि रत्नों और आभूशणों से संबंधित उद्योग-धंधे हमेशा फलते-फूलते रहे हैं और विपणन व पूँजी निवेशक को बढ़ावा देते रहे हैं।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3592672

इंस्टालेशन आर्ट-

इंस्टालेशन शब्द का प्रयोग पश्चिम में साठ के दशक से आरम्भ हो जाता है, परन्तु भारत के लिए यह शब्द उतना पुराना नहीं कहा जायेगा जितना कि पश्चिम में। भारतीय कलाकारों ने आधुनिक विद्या को बहुत पहले ही अपना लिया। यूरोप में इस विद्या में सर्वाधिक प्रयोग हुये तत्पश्चात् इंस्का प्रभाव अन्य देशों पर भी पड़ा। इसकी शुरूआत मार्शल के फाउन्टे नामक कृति से हुयी। तभी से इस विद्या को जाना गया और अन्य कलाकारों ने भी इस विद्या पर कार्य किया। इससे कला विस्तार को एक नया आयाम मिला। जो कलाकार केवन कैनवास तक ही सीमित हो गये थे वे अब कैनवास से आगे भी कुछ सोचन लगे। इंस्टालेशन आर्ट से कला में आधुनिक व शांतिकारी विचारों का समावेश हुआ। इंस्टालेशन आर्ट में कलाकारों ने कला के माध्यम से दैनिक जीवन की घटनाओं को वातावरण में घटित होने वाली घटनाओं को उजागर करने का प्रयास किया। 20 वीं सदी के अंतिम पड़ाव तक आते कला में अन्तराष्ट्रीय रूप में इंस्टालेशन आर्ट के नये स्वरूप की अभिव्यक्ति सामने आयी। आज इंस्टालेशन के रूप में ऐसा माध्यम स्वीकृति पा रहा है जो दृश्य में विडम्बनापूर्ण जीवन को प्रस्तुत कर सकता है। यह समाज और कला के बीच मूर्त किन्तु फिर भी अमूर्त बने संबंधों को उजागर करती है। यह संरचना कला जगत के लिए अर्न्तआवेगों की सरल अभिव्यक्ति बनी है।

भारत में हमें अपने आस-पास के क्षेत्र में ही बहुत से इंस्टालेशन देखने को मिल जाते हैं। अंजली इलामेनन ने भारत के इंस्टालेशन आर्ट के विषय में कहा है कि ''भारत को इंस्टालेशन आर्ट की जरूरत नहीं है।'' भारत के लैण्डस्कैप स्वयं में ही एक प्राकृतिक इंस्टालेशन है। चंडीगढ़ में नेकचंद का रॉक गार्डन कलाकृतियों व इंस्टालेशन के लिए बहुत प्रसिद्ध है। उन्होंने इसमें चंडीगढ़ व अन्य स्थानों से प्राप्त अनुपयोगी सामान को बहुत ही सौन्दर्यमय रूप से एक अनुपयोगी स्थान पर स्थापित किया। भारत में विवान सुन्दरम अपने आस-पास की उपयोगी, अनुपयोगी, साधारण-असाधारण, उत्तम या व्यर्थ वस्तुओं को मिलाकर उनका इंस्टालेशन करते हैं। अनेक नये पुराने कलाकार इन दिनों वीडियों इंस्टालेशन का सुन्दर रचनात्मक इंस्तेमाल कर रहे हैं। विवान सुन्दरम्, नलिनी, मालिनी, रणवीर सिंह कलेका, सुबोध गुप्ता, सुब्बा घोश, आदि अनेक कलाकार इस कला में कार्य कर रहे हैं। आज के सभी नवयुगी कलाकार अपनी कला में नवीनता लाना चाहते हैं। नये माध्यम प्रयोग करना चाहते हैं। कुछ न कुछ अलग करने की चाह रखते हैं। इंस्टालेशन आर्ट इन कलाकारों के लिए एक नवीन माध्यम बनकर उभरा है।

मूर्तिकला- आज कलाकार आत्माभिव्यक्ति की भूख को शांत करने को सर्वोपरि मानता है इससे उनकी शैलीगत विभिन्नता उजागर होती है और अपनी अलग पहचान बनाती है। कला की अन्य विधाओं की तरह मूतिकला के क्षेत्र में भी ये सभी बातें लागू होती है। यहाँ पत्थर, धातु, मिटटी के काष्ठ आदि पारम्परिक माध्यमों के अतिरिक्त अब फाइबर, एल्यूमीनियम आदि का प्रयोग शुरू हो गया है। अभिव्यक्ति किसी भी माध्यम से

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3592672

हो, साधना और समर्पण से ही सफलता मिलती है। प्रदेश में मूर्तिकला को लेकर बहुत काम हुआ खास कर टेराकोटा में काम करने की समृद्ध परम्परा प्रदेश में दिखाई पड़ती है। इस नजर से टेराकोटा काम को पूर्वांचल क्षेत्र में भी बहुत प्रसिद्धि मिली। अब पाश्चात्य प्रभाववश मूर्तिकला में मिश्र धातुओं, फाइबर ग्लास का भी प्रयोग हो चुका है।

अंकित पटेल, बलवीर सिंह कटट, एस0 जे0, श्री खण्डे, देश के विश्वविखयात सुप्रसिद्ध मूर्तिकार है। अंकित ने जयपुर को अपनी कर्मभूमि बनाया है। खण्डे जी ने मिश्र धातुओं, फाइबर ग्लास का प्रयोग करके युवा कला वर्ग को नया माध्यम प्रदान किया है। वहीं बलवीर सिंह कटट विशालकार मूर्तिशिल्प के संस्थागत स्वभाव के संबंर्धन का श्रेय लेते हैं। इन्होंने आधुनिक समय में मूर्तिशिल्प को व्यापक आयाम दिया और इस क्षेत्र में नवीन संभावनाओं की खोज की, विभिन्न टैक्सचर का प्रयोग करके शिल्प में गति लय, फ्यूजन नवीनता लाने का प्रयास किया। मूर्तिकला की अपेक्षा अन्य कलाओं का माध्यम सरल व सहज है तथा उतना श्रम साध्य नहीं है। मूर्तिकला में विषय की अभिव्यक्ति बहुत ही श्रम साध्य है। इसमें पूर्ण शक्ति व क्षमता का प्रयोग करना पड़ता है। इन्हीं सब कारणों से आज का युवक मूर्तिकला की अपेक्षा अन्य कलाओं की तरफ ज्यादा आकर्षित होता है, दूसरी बात, अब मूर्तिकला में बहुत से प्रयोग हुए हैं। बहुत प्रकार की धातुओं का प्रयोग होने लगा है यही सभी माध्यम बहुत श्रम साध्य है।

फैशन डिजाइनिंग कला- फैशन डिजाइंनिंग के कैरिअर का मतलब केवल ग्लेसर और अमीर लोगों से मुलाकात ही नहीं है बल्कि इंस्में रचनात्मक और स्टाइल की समझ की जरूरत होती है। असल में फैशन डिजाइनिंग परिधान और इसमें जुड़ी सामग्री पर सौन्दर्यशास्त्र और डिजाइन के प्रयोग करने की कला का नाम है। फैशन डिजाइनिंग संस्कृति और सामाजिक मनोवृत्ति से प्रभावित होती है। परिधान और इसकी अनुगामी वस्तुओं की डिजाइनिंग तैयार करते समय डिजाइनर अनेक तरह से काम करते हैं। डिजाइनिंग के लिए उन्हें इस तरह के प्रयास करने होते हैं जिससे समय के मुताबिक बदलने वाली उपभोक्ताओं की पसन्द और बाजार की मांग के अनुसार परिधान तैयार किए जा सके। आज फैशन डिजाइंनिंग का व्यापार भारत में नहीं नहीं, बल्कि सम्पूर्ण विश्व में जाल की तरह फैला हुआ है। डिजाइनिंग का क्षेत्र तो अत्यंत ही विस्तृत है। आपके कपड़ों, गहनों से लेकर जूतो तक, आधुनिक आफिसों से लेकर घर में इंस्तेमाल होने वाले उपकरणों तक, सभी चीजों के पीछे किसी न किसी डिजाइनर का अमूल्य योगदान होता है। उच्च कोटि के डिजाइन मार्केट में उच्च दामों में बिकते हैं।[6] प्रतिशत की सालाना विकास दर के साथ भारत दुनिया में सबसे तेजी से विकास कर रही अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। दुनिया की तकरीबन सभी बड़ी कम्पनियां इस विशाल बाजार में हिस्सेदारी चाहती है। डिजाइनिंग के माध्यम से व्यापार को बढ़ावा तो मिला ही है कई लोगों को रोजगार भी प्राप्त होते हैं। आधुनिक युग में कलाकारों ने कला के वास्तविक रूप को बदल दिया है। जहां पहले कलाकार चित्रण कार्य अपनी कलाकृतियों के प्रदर्शन व आत्म संतुष्टि के लिए करता था। वहीं आज वह

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3592672

व्यापार व पूंजी निवेश के बढ़ते प्रचलन की ओर आकर्षित होकर कलाकृतियों का निर्माण कर रहा है। कलाकार एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा का भाव रखकर कलाकृतियों का निर्माण कर रहे हैं। जिससे विपणन और पूंजी निवेश का मार्ग और भी प्रशस्त होता जा रहा है।

लोक कला- लोक कला जनमानस की कला है। इसका आधार मानव संस्कृति से जुड़ा है। आधुनिक कला के उद्‌भव को किसी निश्चित समय से हम नहीं जोड़ सकते। इंस्का अनुमान तो हम इससे लगाते है कि जब से कलाकार की कला में बदलाव आया, नूतन प्रवृत्तियां समाहित हुयी कला के मूल्यों के आधार पर ही तय करते हैं। यह तो सार्वलौकिक सत्य है कि प्रारम्भिक पश्चिमीकरण की आंधी से उभर कर भारतीय कलाकारों में कुछ नया करने की लालसा जगी। उनके अंदर अपनी जड़ों से जुड़ने की दृष्टि का समावेश हुआ। जो देश की स्वतन्त्रता के बाद तीव्रगामी हो लोक आकारों के देशीपन से अपनी गरिमामयी चित्रभाषा की खोज करने लगा। आधुनिक कला ने जहां प्रयोगधर्मिता के मानदंड बदले हैं वहीं विद्वायों के चयन में दृष्टि परिवर्तन हुआ है। भारतीय आधुनिक आज वैयक्तिक प्रवृत्तियों का विशाल भंडार है जहां कैनवास, कागज, कपड़ा, लकड़ी आदि कोई भी वस्तु कला उत्प्रेरण का आधार बनी है। लोक कलायें हमारे देश में लोक जीवन, लोक परम्पराओं व लोक संस्कृति का दर्पण है। कोई भी शुभ अवसर हो, पूजन हो या उत्सव, लोक चित्रांकन समयानुकूल भावों को प्रदर्शित करने में सक्षम होते है। वे शब्दों और भावनाओं को प्रतीकात्मक स्वरूप प्रदान करते हैं।

संदर्भ

[1] हल्दर असित कुमार, बंगाल का पटचित्र, पृ0 25
[2] यादव नरेन्द्र सिंह, विज्ञापन तकनीक एवं सिद्धान्त, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर 2008, पृ0 4
[3] विरंजन राम, समकालीन भारतीय कला, निर्मल बुक एजेन्सी, कुरूक्षेत्र 2003, पृ0 33
[4] फोटोग्राफी एंड दा परफारमिंग आर्ट, लोकल प्रेस, पृ0 100
[5] स्वामी, ई0 कुमारिल (1986), भारतीय कला और कलाकार, भारत सरकार पटियाला हाउस नई दिल्ली
[6] शर्मा, देवदत्त विनोद कुमार (2002), मुद्रण एवं सज्ज राजस्थान, हिन्दी ग्रंथ अकादमी
[7] कला त्रैमासिक, राज्य ललित कला अकादमी, जुलाई से सितम्बर 2000, पृ0 13
[8] मेरठ पत्रिका, जुलाई (2010)
[9] कला त्रैमासिक, छापा कला विशेषांक- राज्य ललित कला अकादमी-जुलाई से सितम्बर 2006, पृ0 2
[10] योजना, अगस्त, (2010)
[11] कला चिंतन, योगेन्द्र नाथ योगी, राज्य ललित कला अकादमी, पृ0 44
[12] विशेषांक लोक जीवन में कला, राज्य ललित कला अकादमी, जुलाई से सितम्बर 2006, पृ0 2